Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852; Impact Factor: RJIF 5.44
Received: 01-06-2020; Accepted: 08-06-2020; Published: 15-06-2020
Volume 1; Issue 1; 2020; Page No. 53-56

कोरोना महामारी और भारतः एक अध्ययन समाजषास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में

सतीष कुमार
स्वतंत्र शोधार्थी (समाजशास्त्र) बरवाला, जिला–हिसार, हरियाणा, भारत

सारांश
कोरोना महामारी एक विश्वयापी महामारी है। यह महामारी चीन के वुहान शहर में दिसम्बर 2019 में पैदा होकर एक या दो महिने में ही पूरे विश्व में फैल गई है। भारत में भी यह बिमारी कुछ ही दिनों में फैल गई है। इस महामारी ने पूरे विश्व में आर्थिक व सामाजिक समस्या उत्पन कर दी है। परन्तु भारत में आर्थिक व सामाजिक समस्या विश्व के अन्य देशों की अपेक्षा अधिक है। जिसके कई कारण है परन्तु मुख्य कारणों में देश के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी का पाखण्डवादी नेत्रत्व तथा पुलिस प्रशासन का अमानवीय व्यवहार तथा मीडिया के द्वारा कोरोना को लेकर भय पैदा करना है। जिसके परिणामस्वरूप हमारे देश की जनता विशेषकर मजदूर भुख से और पुलिस की लाठियों से और पैदल यात्रा करके सडक तथा रेल की पटरियों के रास्तों से सीधा व जल्दी घर पर पहूचे से पहले ही अपनी जीवन की यात्रा समाप्त कर रहे है। कोरोना से हमारे देश के प्रधानमन्त्री के द्वारा लॉकडाउन का निणर्य लिया गया जिससे देश में हर वर्ग के व्यक्ति को हानि हुई है। तथा कोरोना के समाज पर नकारात्मक और सकारात्मक दोनो प्रकार के प्रभाव पडे है। भारतीय समाज में कोरेना से लॉकडाउन हुआ और लॉकडाउन से बेरोजगारी व आर्थिक मन्दी आ गई तथा बेरोजगारी व आर्थिक मन्दी से देश में वर्ग भूमिका संघर्ष की परिस्थिति पैदा हुई और वर्ग भूमिका संघर्ष से भुखमरी की परिस्थिति पैदा हुई तथा भुखमरी से मृत्यु होगी और मृत्यु से परिवार की संरचना में परिवर्तन होगा और परिवार की संरचना में परिवर्तन से समाज की संरचना में परिवर्तन तथा समाज की संरचना में परिवर्तन से समाज फिर से संतुलन करेगा जिसके परिणाम से एक नये समाज का उदय होगा । अतः कोराना महामारी से भारतीय समाज में कई परिवर्तन होगे।

मूल शब्दः कोरोना वायरस, लॉकडाउन, मजदूर, भुखमरी, वर्ग भूमिका सघंर्ष

प्रस्तावना
कोरोना वायरस से फैली बिमारी एक विश्वयापी महामारी है। ''जो दिसम्बर 2019 में चीन के हुबेई प्रान्त के वुहान शहर से शुरू हुई तथा 31 दिसम्बर 2019 को इसे विश्व स्वास्थ्य संगठन को बताया गया । 30 जनवरी 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोवीड–19 को वैश्रिक स्वास्थ्य आपतकाल घोषित किया । 11 मार्च 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोवीड–19 को वैश्रिक महामारी घोषित किया । इस प्रकार मार्च तक यह महामारी लगभग पूरे विश्व में फैल गयी थी तथा विश्व में कोरोना वायरस के कारण 31 मई तक 60 लाख से अधिक कुल सक्रंमित मामले और 3.75 लाख मृत्यु हो चुकी है। और भारत में 1.87 लाख से अधिक कुल सक्रंमित मामले और 5 हजार से अधिक मृत्यु हो चुकी है। अमेरिका में सबसे अधिक सक्रंमित मामले और मृत्यु हो चुकी है।'' [1] भारत में जब पहली बार 23 मार्च को लॉकडाउन–1 का ऐलान प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा किया गया जब केवल 500 ही सक्रंमित मामले थे। परन्तु आज लॉकडाउन–4 समाप्त हो जाएगा। लॉकडाउन के कारण भारत में कोरोना पर तो काफी नियन्त्रण हुआ है। परन्तु प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी का पाखण्डवादी नेत्रत्व ''थाली या घन्टा बजाना और लाईट बन्द करके मोमबती जलाना जैसे सम्बोधन करके कहना बहूत ही गलत कार्य था क्योकि कोरोना एक वायरस से फैलने वाली बिमारी है। कोई जानवर नही है जो थाला या घन्टा बजा कर आवाज करने से या लाईट बन्द करके अंधेरा करने से भाग जाएगा।''[2] मेरी नजर में यह एक राष्ट्रीय स्तर का पाखण्ड था जिससे ''भारतीय सविधान के भाग–4 में मौलिक कर्तव्यो के अनुछेंद 51क(ज) वैज्ञानिक स्वभाव, मानवतावाद और जांच व सुधार की भावना को विकसित करने के लिए प्रयास करे''[3] का उलंग्न किया गया है। परन्तु कल से लॉकडाउन–5 शुरू हो जाएगा। जिसे अनलॉक–1 का नाम दिया गया है। पहले तो 500 मामलों पर लॉक किया गया था अब 1.87 पर हटाया जा रहा है। जोकि दोनों नियर्ण जनता के हित में नही है। क्योंकि यदि ऐसी परिस्थिति में लॉकडाउन खुलता है तो 30 जुन तक 4.5 से 5 लाख तक होने की संभावना है। तथा पुलिस प्रशासन के द्वारा मजदूरों पर जो लाठीया बरसाई जाती है यह कार्य एक कल्याणकारी राज्य में अमानवीय व्यवहार है। और भाजपा सरकार के मन्त्री भी देश की जनता को बचाने के लिए चिकित्सा सुविधाओ की ओर कोई ध्यान नही दे रहे है। परन्तु आज कोरोना महामारी के समय में भी घोटाला करने की सोच रहे हैं या कर रहे है। कोरोना संसार के लगभग सभी देशों में फैल चुका है। परन्तु भारत की जनता की जो दुर्दशा है वह अब तक किसी देश की जनता की नही है। यहा पर लोग भुख से मर रहे है, अपने घर पर जाने के लिए पैदल चल रहे है, पैरो में छाले पडे हुए है, गर्भवती महिला रास्तों पर ही बच्चे को जन्म देकर पैदल चल रही है, कही सडक पर तो कही रेलवे स्टेशनों पर तो कही पर रेल में बच्चे बूढे महिला पुरूष मजदूर मर रहे है। पर देश के प्रधानमन्त्री को चिन्ता नही है। अपने सम्बोधनों में नई–नई झुठ बोले जा रहा है। आज देश में गृह युद्व की स्थिति बनती नजर आ रही है। कई स्थानों पर तो जनता और पुलिस के बीच सीधी आमने सामने के लडाई तक हुई है जिसमें जनता व पुलिस दोनो को हानि हुई है। इन सब घटनों से भारतीय समाज में उथल पुथल मच गई है। जिसके कारण के कुछ हानि हुई है तो कुछ लाभ हुआ है। इस लेख में हम कोरोना महामारी के आने से भारतीय समाज में हुए परिवर्तन तथा उन परिवर्तनों के लिए मुख्य रूप से कौन उतरद्वायी है, के बारे में मीडिया पर या सामाजिक वेबसाईटों तथा समाचार पत्रों व शोध पत्रों पर चर्चा करेगे।

उद्देष्य
- कोरोना से हुई भारतीय समाज की दुर्दशा के बारें अध्ययन करना ।
- कोरोना से हुई भारतीय समाज की दुर्दशा के प्रति कौन उतरद्वायी है,का अध्ययन करना।
- कोरोना से भारतीय समाज में हुए परिवर्तनों के नकारात्मक व सकारात्मक पक्षों का अध्ययन करना।

शोध क्रिया विधि
प्रस्तुत शोध पत्र में विषय से सम्बंधित तथ्यों के संकलन के लिए द्वितीयक स्त्रोतों जैसे– पुस्तक, पत्रिकों, समाचार पत्र, शोध ग्रन्थों तथा इंटरनेट आदि से अध्ययन किया गया हैं। और विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति का प्रयोग किया है।

कोरोना वायरस (कोवीड–19)

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कोवीड–19 का अर्थ – ''कोवीड–19 संक्रामक रोग है जो कोरोना वायरस से एक नए तनाव में होने वाली बीमारी है, को (Co) का अर्थ कोरोना, वी (V) से वायरस और ड (D) से बीमारी तथा 2019 में इस वायरस का पहला मरीज पाया था। इसलिए को+वी+ड+2019 से इस वायरस का नाम कोवीड–19 पडा है। यह एक नया वायरस है जो वायरस परिवार के एक ही परिवार से जुडा है जो गंभीर तीव्र श्वासन है सिड्रोम और कुछ प्रकार के आम सर्दी है।''[4]

कोरोना या कोवीड–19 का भारतीय समाज पर प्रभाव

विश्व में फैली कोरोना महामारी ने पूरे विश्व को आर्थिक व सामाजिक समस्याओं में डाल दिया है। परन्तु भारत विश्व के अन्य सभी देशों की अपेक्षा इन समस्याओं से अधिक घिरा हुआ है। इसके कई कारण है परन्तु मुख्य कारण प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा लिया गया लॉकडाउन का निणर्य है। लॉकडाउन का निणर्य लेना गलत नही है परन्तु उसको गलत समय और गलत उपायों के साथ लागू करना गलत है। लॉकडाउन का निणर्य लेने से पहले देश की परिस्थितियों को जानना जरूरी था। इस प्रकार परिस्थितियों को देखते हुए कुछ राज्यों में तथा कुछ देश की जनता को पहले बताकर लागू करना था ताकि लोग लॉकडाउन के निणर्य को सफल बनाने के लिए अपनी पूरी तैयारी कर ले यदि ऐसा होता तो आज देश की जनता यह हाल नही होता। अचानक लॉकडाउन का निणर्य से सभी वर्गो के उत्पादन एकदम से बन्द हो गये जिसके कारण देश के अन्दर आर्थिक मन्दी एवं बेरोजगारी आ गई और वर्ग भूमिका संघर्ष की स्थिति पैदा हो गई। हम यहा पर आगे चर्चा करने पहले वर्ग भूमिका संघर्ष के अर्थ को जानेगे। वर्ग भूमिका संघर्ष दो अलग अलग अवधारणाओं वर्ग + भूमिका संघर्ष से बना है। ''मार्क्स के अनुसार वर्ग व्यक्तियों का ऐसा सग्रह है जो उत्पादन की शक्तियों एवं साधनों से समान संबंध से जुडे रहते है।''[5] ''भूमिका संघर्ष का अर्थ है समाज में प्रत्येक व्यक्ति और एक वर्ग विशेष की कुछ भूमिकाएं होती है। और जब व्यक्ति और वर्ग अपनी दो या दो से अधिक भूमिकाओं को निभा में संतुलन नही कर पाता है तो उसे भूमिका संघर्ष कहते है।''[6] हम वर्ग भूमिका संघर्ष को और अधिक स्पष्ट रूप से इस प्रकार समझ सकते है कि हमारे देश के सभी वर्गो के उत्पादन या ये कहे कि आमदनी बन्द हो गई है परन्तु खर्च ज्यों का त्यों बना हुआ है जिसके कारण सही संतुलन नही होने से सभी वर्गों मे भूमिका संघर्ष हो जाता है। जिससे देश में वर्ग भूमिका संघर्ष की स्थिति पैदा हो जाती है और इससे देश में हर वर्ग के जो जीवित रहने के साधनों का जो भण्डार था यह वर्ग की अपनी क्षमता के अनुसार जल्द या देर से समाप्त होता जाएगा। जिससे भुखमरी की समस्या होती है। तथा भुखमरी से लोगो की मृत्यु होती है। और मृत्यु से परिवार की संरचना में परिवर्तन हो जाता है। इस प्रकार परिवार की संरचना में परिवर्तन होने से समाज में भी परिवर्तन होता है। क्योकि समाजशास्त्र के जनक अगस्ट कॉम्टे ''परिवार को समाज की केन्द्रीय इकाई मानते है।''[7] परिवर्तन समाज के लिए आवश्यक है यदि परिवर्तन की गति धीमी है तो परिवर्तन उद्विकास की प्रकिया से होगा जो समाज के लिए लाभदायक है। और यदि परिवर्तन की गति तीव्र है तो परिवर्तन क्रान्ति की प्रकिया से होगा जो समाज के लिए हानिकारक है। ''समाज में जो मानवीय सरोकार उभरेगें वे भी लिखने या लिपिबंद्ध करने लायक होगें। धर्म और संप्रदाय के नए मायने समाज में प्रचलित होंगे। जो सर्व स्वीकृत और राजनीतिक स्वार्थो से अलग होंगे। एक नई मानवीय चेतना से महजब और धर्म के नए स्वरूप विकसित हों सकेगें।''[8] परिणाम स्वरूप एक नव समाज का निमार्ण होगा।

कोरोना या कोवीड–19 के प्रभाव का भारतीय समाज में क्या परिणाम है और आगे क्या होने की सम्भावना को निम्न रेखाचित्र द्वारा समझाया जा सकता हैः–

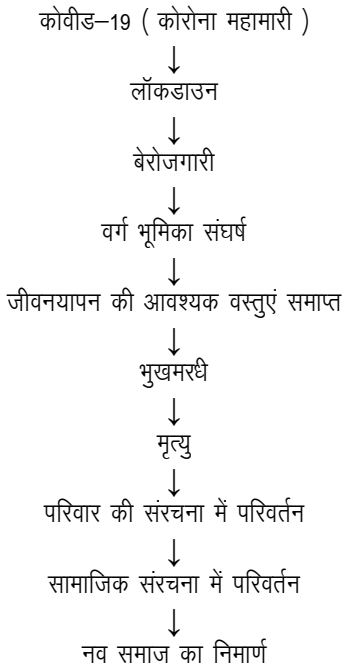

इस प्रकार उर्पयुक्त रेखाचित्र के द्वारा हमें कोरोना या कोवीड–19 के प्रभाव से भारतीय समाज में हुये परिवर्तन के बारे मे जाना है। आगे हम कोरोना वायरस के प्रभाव से वर्तमान में भारतीय समाज में हुये परिवर्तनों के नकारात्मक व सकारात्मक पहलूओ पर चर्चा करेगे।

कोरोना के नकारात्मक पहलु[9]

कोरोना महामरी से भारतीय समाज में हूए परिवर्तनों के नकारात्मक पहलूओ पर हम यहा पर चर्चा करेगे। हम जिनको निम्न बिन्दूओं के द्वारा ज्ञात करेगे।

1. वर्तमान में जनसंख्या में वृद्वि हुई।
2. बेरोजगारी में वृद्वि हुई।
3. गरीबों व मजदूरों की दुर्दशा हुई।
4. प्रत्येक नागरिक के कार्य बाधित हुए।
5. विधार्थीयों की पढाई में नुकसान हुआ।
6. प्रत्येक नागरिक को व्यर्थ का डर हुआ।
7. सम्प्रदायिकता में वृद्वि हुई।
8. राष्ट्रीय स्तर पर पाखण्डवाद में वृद्वि हुई।
9. देश की आर्थिक स्थिति कमजोर हुई।
10. जनता में भुखमरी व असहाय की परिस्थिति पैदा हुई।
11. देश का बहुत सा धन व्यर्थ में खर्च हुआ।
12. देश में शैक्षणिक व नौकरी सम्बधी परीक्षाऍ रद्द हुई।
13. जनता व पुलिस प्रशासन के बीच संघर्ष से गृह युद्व की स्थिति पैदा हुई।

14. मरीजों के साथ अमानवीय व्यवहार हुआ ।
15. कई डॉक्टर व सुरक्षा कर्मियों को अपनी जान नौछावर करनी पडी।

कोरोना या कोवीड–19 के प्रभाव से भारतीय समाज की दुर्दषा के कारण

कोरोना वायरस के प्रभाव से भारतीय समाज की जो दुर्दशा हुई है। इसके कई कारण है। जिसको हम निम्न शीर्षकों से ज्ञात कर सकते है।

1. समाजिक[10]

कोरोना महामारी से समाज के प्रत्येक व्यक्ति में केवल अपने आपकी जान बचाने की पडगी थी। और ये सत्य भी है कि जीवन है तो जहान है। या ये कहे कि पहला सुख निरोगी काया, और बाकी सुख उसके बाद में होते है। परन्तु मीडिया और सरकार ने इस बीमारी को जनता के सामने जितने भयानकर ढंग से प्रस्तुत किया है। उससे जनता को अपने आपको छोडकर इस संसार में कुछ भी मुल्यवान नही था। मानवता की सीमाओं को तोड दिया था। व्यक्ति पडोसी से दूरी तथा मकान मालिक किरायेदार से दूरी बनाने लगे थे और यहा तक की कई जगहों पर तो मकान मालिकों ने किरायेदारों को मकान से निकाल तक दिया। और कई जगहों पर लोग ने खाद्य पर्दाथों की काला बाजारी भी की। तथा पैदल जाने वाले को किसी भी व्यक्ति ने किसी राहिगार को अपने वाहन में नही चढाया। व्यक्ति की ऐसी भावनाए उसे व्यक्तिवादी या स्वार्थी बनाती है और समाजिकता से दूर ले जाती है।

2. राजनैतिक[11]

भारत में कोरोना महामारी के कारण लोगों में विशेषकर गरीबों व मजदूरों को जिन समस्याओं का सामना करना पडा है। इनमें दो मुख्य राजनैतिक कारण है। पहला, प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा लिया गया लॉकडाउन का निणर्य है। प्रधानमन्त्री को लॉकडाउन की घोषणा करने से पहले उत्पन्न होने वाली परिस्थितियों के बारे में जानकार लेना एक महत्वपूर्ण कार्य था। या फिर लॉकडाउन के दौरान जनता को सभी आवश्यक वस्तुऍ प्रदान करने का प्रबन्ध करना था। प्रधानमन्त्री के लिए लॉकडाउन शायद एक रात के समान था कि नींद आई और दिन निकला। लॉकडाउन का निणर्य लेने से पहले हर दृष्टिकोण से देश में उत्पन्न होने वाली परिस्थितियों पर ध्यान देना था। परन्तु ऐसा नही हुआ। क्योकि देश की डोर अमीर व उधोगपतियों के हाथों में है। साधारण जनता की सरकार नही है और साथ ही ऐसा लगता है। कि भाजपा सरकार को भारत के सविंधान के अनुसार न चलाकर मनुस्मृति और हिन्दू शास्त्रों के अनुसार चला रही है। इस प्रकार प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा लिये गये सभी निणर्य गरीब जनता के पक्ष में न होकर अमीरों पक्ष में थे। अर्थात् देश की साधारण जनता को हानि हुई है। निणर्य चाहे नोट बन्दी हो या लॉकडाउन का हो।

दुसरा, राजनेताओं के द्वारा कोरोना को एक राजनैतिक मुद्दा बनाना है। जब देश किसी महामारी के दौर से गुजर रहा हो और नेता लोग यदि उस महामारी को राजनैतिक मुद्दा बना ले तो यह बडी शर्म की बात है। कुछ लोग या नेता मेरी इस बात से सहमत नही होगे। परन्तु जब देश किसी समस्या में हो और नेता लोग इसे एक राष्ट्र के स्थान पर राज्यों बांट दे तो यह राजनिति ही तो है। और इसे क्या नाम दे। हमारे संविधान के भाग–3 में वर्णित मौलिक अधिकारों की धारा 19(1) डी व ई में प्रत्येक नागरिक को भारत के किसी भी स्थान पर आने जाने व रहने की अधिकार है। ''परन्तु यहां मजदूरों के साथ कई राज्यो ने सौतेला व्यवहार किया है।''[12] मजदूरों को एक राज्य से दुसरे राज्य में आने या जाने के लिए दोनों राज्यों के मुख्यमन्त्री की सहमति अनिवार्य है। ये एक प्रकार से राजनेताओं के द्वारा कोरोना को एक राजनैतिक मुद्दा बनाना है। ताकि आगामी चुनाव में जनता के सामने ये कहा जाए कि कोरोना काल में हमारी सरकार ने गरीब ,मजदूरों की अपने राज्य में वापसी करवाई थी।

3. प्रषासनिक[13]

भारत सरकार के द्वारा लॉकडाउन की घोषणा के बाद देश में लॉकडाउन के नियमों का सही तरह से पालन करवाना तथा शांति व्यवस्था बनाए रखने का काम पुलिस प्रशासन का है। कुछ राष्ट्र प्रेमी पुलिस कर्मियो अपने कर्तव्य को बेखुबी निभाया है। तो कुछ पुलिस कर्मियो ने तानाशाह बनकर जनता को बिना किसी ठोस कारण के ही पिटा है। और तानाशाह पुलिस कर्मियो का शिकार बने है मजदूर (जिसमें स्थानीय और प्रवासी दोनों शामिल है)। कई स्थानों पर तो जनता व पुलिस के बीच मुठभेड भी हूई है। जो गृह युद्ध की ओर संकेत करती है, जो कि गलत है। जनता को मुख्यतः मजदूरों को उतना डर कोरोना वायरस का नही है, जितना डर पुलिस का है। यह बडी शर्म की बात है कि देश का सविंधान जिस पुलिस प्रशासन को जनता की सेवा, सुरक्षा और सहयोग का दायित्व सौपता है। वह उसके विपरीत जनता को पिट रहा है।

4. सम्पदायकिता[14]

महामारी कैसी भी हो वह ये नही देखती कि उसे किस धर्म जाति व प्रजाति के व्यक्ति के होना है। वह तो केवल यह देखती है कि वह जीव है। परन्तु भारत जैसे देश में महामारी फैलाने के लिए भी धर्म को उतरद्वायी माना जाता है। कुछ लोगों का मानना है कि मुस्लिम धर्म के व्यक्तियों ने इस बीमारी को अधिक फैलाया है। जोकि गलत है। जिस के कारण देश में कई स्थानों पर मुस्लिम धर्म के व्यक्तियों बिना किसी कारण ही तंग किया गया है।

5. मीडिया[15]

कुछ सीमा तक मीडिया नें भी जनता को डरावनी खबर देकर भहभीत किया है। तथा अपनें चैनल की टी0आर0पी0 बढानें के लिए अधिक से अधिक खबर बनाने पर जोर दिया है। जैसे किसी न्युज रिपोर्टर को यदि ये पता चला है। कि किसी स्थान पर कोई व्यक्ति भुखा मर रहा है या उसके पैरो में छाले पडे है तो क्या वह एक भारतीय नागरिक होने के नाते खबर बनाने के बाद या पहले उस व्यक्ति को खाना खिला सकता था और महलम पटी कर सकता था परन्तु ऐसा न करके उन्होनें लाइव दिखाने से अधिक लाभ हुआ हैं। जिससे ये साबित होता है कि मीडिया स्वंय हिती है, राष्ट्र हिती नही है। और जनता के दिमाग में कोरोना का इतना भय पैदा कर दिया कि यह जिस व्यक्ति के होगा वह आवश्यक ही मरेगा परन्तु भारत में कोरोना वायरस से होने वाली मृत्यु दर 3 प्रतिशत ही है।

6. आर्थिक[16]

कोरोना से भारतीय समाज की जो दुर्दशा हुई है। उसके लिए सबसे अधिक उतरद्वायी कारक हमारे देश की आर्थिक स्थिति है। हमारे देश की 32 प्रतिशत जनसख्या गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रही है। हमारे यहां पर मजदुरों संख्या भी विश्व में सबसे अधिक है। जो हर रोज अपनी श्रम बेचकर अपनी रोजी रोटी चलाते है अर्थात् जिस दिन काम नही मिला उस दिन उनके घर का चुल्हा नही जलता है। इसलिए मजदुरों की बहुत अधिक दुर्दशा हुई हैं।

कोरोना के सकारात्मक पहलु

जंहा पर कोरोना से नकारात्मक प्रभाव भारतीय समाज पर पडा है। वही कोरोना का सकारात्मक प्रभाव भी भारतीय समाज में देखने को मिला है। हम यहां पर कोरोना के सकारात्मक पहलूओ को निम्न बिन्दूओं के द्वारा ज्ञात करेगे।

1. वर्तमान में मृत्यु दर में गिरावट आई [17]

कोरोना के कारण देश में समाजिक दुरी बनाए रखने के लिए लॉकडाउन लगाया गया जिसके कारण यातायात के साधनों का कम प्रयोग किया गया जिससे देश में सडक दुर्घटनाओं के कारण होने वाली मृत्यु की संख्या कम हूई है। हमारे देश में सडक दुर्घटनाओं के कारण 2018 में लगभग 151400 मृत्यु होती है। 2020 में 2018 की अपेक्षा सडक दुर्घटनाओं के कारण मृत्यु दर मे 15 प्रतिशत कमी हुई है। 31 मई 2020 तक लगभग 5000 मृत्यु कोरोना के कारण हुई है। इस प्रकार हम कह सकते है कि वर्तमान में मृत्यु दर में कमी हुई है।

2. भारतीय समाज सहयोग की भावना उत्पन्न हुई [18]

हमारे देश में गरीबों व मजदूरो की जनसंख्या अधिक होने के कारण लॉकडाउन से उनकी हालत असहाय व हलाचार जैसी हो गई है जिसके कारण अमीर व माध्यम वर्ग की जनता नें गरीबों व मजदूरों की अपनी क्षमता के अनुसार सहायता की है।

वैसे कोई भी किसी की सहायता नही करता है। परन्तु कोरोना के कारण लोगो ने प्रधानमन्त्री राहत कोष में तथा प्रत्यक्ष रूप से एक दुसरे की सहायता की है। जिस हम ये कह सकते है कि भारतीय समाज में सहयोग की भावना उत्पन्न हुई है।

3. पर्यावरण शुद्व हुआ[19]

कोरोना से बचने के लिए देश में लॉकडाउन लगाया गया और लॉकडाउन लगने से देश की सभी कारखानें बन्द हो गये तथा सभी तरह की खादानों में काम बन्द हो गया और यातायात के साधनों का भी कम प्रयोग किया गया। जिसके कारण हमारे देश के पर्यावरण प्रदुषण में कमी हुई है। अर्थात् पहले से पर्यावरण शुद्व हुआ है।

4. जनता के स्वस्थ्य में सुधार हुआ[20]

लॉकडाउन के कारण कारखानों बन्द रहे व यातायात के साधनों का भी कम प्रयोग किया गया। जिसके कारण पर्यावरण प्रदुषण में कमी हुई है जिससे लोगों के स्वस्थ्य में सुधार हुआ है। सडक दुर्घटनाओं के कारण होने वाली विक्लांगता में भी कमी हुई है।

5. मौजुदा सरकार (भाजपा) की असफल[21]

कोरोना महामारी नें छह साल से भारतीय जनता को गुमराह करने वाली सरकार की पोल कोरोना ने मात्र 60 दिन में खोल दी। जो सरकार देश की जनता को बडे–बडे झुठे वादों से झुठी दिलासा दे रही थी। आज वह सरकार आत्मनिर्भर बनने की बात कर रही है। प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी का पाखण्डवादी नेत्रत्व थाला या घन्टा बजाना और लाईट बन्द करके मोमबती जलाना जैसे सम्बोधन करके कहना बहुत ही गलत कार्य था क्योंकि कोरोना एक वायरस से फैलने वाली बिमारी है। कोई जानवर नही है जो थाला या घन्टा बजा कर आवाज करने से या लाईट बन्द करके अंधेरा करने से भाग जाएगा। अतः यह सरकार पुर्ण रूप से पाखण्ड पर आधारित है। जो देश की जनता की भलाई नही कर सकती है।

कोरोना के प्रभाव से भारतीय समाज में आगामी संभावित परिवर्तन[22]

कोरोना के प्रभाव से भारतीय समाज में जो परिस्थितियों बननी हुई है। उन परिस्थितियों से आगे जब समाज आत्मसात या अनुकूलन करके फिर से सन्तुलन की स्थिति में आऐगा। तो कुछ आगामी संभावित परिवर्तन समाज में होगें। फिर एक नये समाज का उदय होगा। कुछ आगामी संभावित परिवर्तन निम्नलिखित है।

1. राजनिति में बडे बदलाव की संभावना है।
2. मजहब व धर्म में नये नियमों के समावेश की संभावना है।
3. मानव मुल्य में वृद्धि की संभावना है।
4. देश में बहुत सी समाजिक समस्याओं (बेरोजगारी, भुखमरी, चोरी, असहाय आदि) के होने की संभावना है।

निष्कर्ष

कोरोना महामारी एक विश्वयापी महामारी है। यह महामारी चीन के वुहान शहर में दिसम्बर 2019 में पैदा होकर एक या दो महिने में ही पूरे विश्व में फैल गई है। भारत में भी यह बिमारी कुछ ही दिनों में फैल गई है। इस महामारी ने पूरे विश्व में आर्थिक व सामाजिक समस्या उत्पन कर दी है। परन्तु भारत में आर्थिक व सामाजिक समस्या विश्व के अन्य देशों की अपेक्षा अधिक है। जिसके कई कारण है परन्तु इसकें मुख्य कारण देश के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी का पाखण्डवादी नेत्रत्व तथा पुलिस प्रशासन का अमानवीय व्यवहार और मीडिया के द्वारा इस बिमारी को एक ऐसी जानलेवा बिमारी बना दिया कि भारत का प्रत्येक नागरिक भयवान हो कर सभी मानवीय और समाजिक कर्तव्यों को भुल गया है। जिसके परिणामस्वरूप हमारे की जनता विशेषकर मजदूर भुख से और पुलिस की लाठियों से और पैदल यात्रा करके सडक तथा रेल की पटरियों के रास्तों पर ही अपनी जीवन की यात्रा समाप्त कर रहे है। तथा अपने ही देश में प्रवासी बन गये और असहाय एवं बेबश हो गये और कोरोना से हमारे देश के प्रधानमन्त्री के द्वारा लॉकडाउन का निणर्य लिया गया जिससे देश में हर वर्ग के व्यक्ति को हानि हुई है। तथा कोरोना के समाज पर नकारात्मक और सकारात्मक दोनो प्रकार के प्रभाव पडे है। भारतीय समाज में कोरेना महामारी के आने से लॉकडाउन हुआ और लॉकडाउन से बेरोजगारी पैदा हुई व आथिर्क समस्या बनी और बेरोजगारी से वर्ग भूमिका संघर्ष की परिस्थिति पैदा हुई और वर्ग भूमिका संघर्ष से भुखमरी तथा भुखमरी से मृत्यु और मृत्यु से परिवार की संरचना में परिवर्तन हो जाता है। इस प्रकार परिवार की संरचना में परिवर्तन होने से समाज में भी परिवर्तन होता है। परन्तु जब समाज मे हुए परिवर्तन से आत्मसात या अनुकूलन करके फिर से सन्तुलन की स्थिति में आऐगा। जिसके परिणाम से समाज में कुछ समाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक बदलाव से एक नये समाज का उदय होगा । अतः कोराना महामारी से भारतीय समाज में कई परिवर्तन होगे।

संदर्भ सूची

1. https://www.who.int/emergencies/diseases/novel-coronavirus-2019
2. कुमार संजय, कोरोना वायरस के दौरान प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के राष्ट्र संबोधन की सोशल मीडिया पर प्रतिक्रिया, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ हुमेनिटीज अन्ड सोशल साईन्स रिर्सज 2020, 6(3):12–14
3. Kashyap C. Subhash: Our Constitution, The Director, Natioanl Book Trust, India Nehru Bhawan,5 Institutional Area, Phase-II Vasant Kunj, New Delhi-110070
4. https://www.mohfw.gov.in/
5. हुसैन मुजतबा : समाजषास्त्रीय विचार ओरियट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड,1/24 आसफ अली रोड नई दिल्ली प्रथम संस्करण–2010 पृ. 74
6. https://en.wikipedia.org/wiki/Role_conflict#:~:text=Role%20conflict%20occurs%20when%20there,the%20many%20statuses%20they%20hold.
7. हुसैन मुजतबा : समाजषास्त्रीय विचार ओरियट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड,1/24 आसफ अली रोड नई दिल्ली प्रथम संस्करण–2010 पृ. 31
8. https://www.amarujala.com/photo-gallery/columns/blog/coronavirus-covid-19-lockdown-effects-in-our-lifestyle?pageId=1
9. https://www.amarujala.com/photo-gallery/columns/blog/coronavirus-covid-19-lockdown-effects-in-our-lifestyle
10. Punjab Today TV, Youtube Channel , Godi media, speak for migrant labourers, Video 4 May 2020 .
11. वही
12. वही
13. वही
14. वही
15. वही
16. जागरण समाचार पत्र का संपादकिय पेज 11 अप्रैल 2020
17. https://www.livemint.com/news/india/india-s-lower-death-rates-seem-to-defy-global-coronavirus-trend-11587723007584.html
18. Anil Agarwal, Executive Chairman - Vedanta Resources Limited to Twitter
19. Susanta Mahato, Swades Pal, Krishna Gopal Ghosh: Effect of lockdown amid COVID-19 pandemic on air quality of the megacity Delhi, India: Science of the Total Environment 2020, 730 (139086) page:1-23
20. https://www.bbc.com/hindi/india-52176065
21. अमर उजाला 19 अप्रैल 2020 और जागरण समाचार पत्र 24 मई 2020
22. https://www.amarujala.com/photo-gallery/columns/blog/coronavirus-covid-19-lockdown-effects-in-our-lifestyle?pageId=1